पंचम अध्याय

उ प सं हा र

'अज्ञेय' व्यक्ति विकास के जीवन मूल्यों में आस्था रखनेवाले उपन्यासकार है। उनका साहित्य सोद्देश्य है। इस कारण उनकी रचनाओं में व्यक्ति विकास की विशिष्ट जीवन-दृष्टि का होना स्वाभाविक है। उनके तीनों उपन्यासों में व्यक्तिवादी जीवन-दर्शन दिखाई देता है। 'अज्ञेय' जी के उपन्यासों मे चिंतन की मुख्य धारा समान है। उनके तीनों उपन्यासों में निम्नांकित विषय आ गये हैं। व्यक्तिवाद की प्रतिष्ठा और स्वातंत्र्य की खोज, विद्रोह भावना का प्राबल्य, विद्रोह में सिध्दी का समर्थन, प्रेम में नवीन नैतिकता तथा आत्मपीड़ा का चित्रण, फ्रायडीयन मनोविज्ञान का प्रभाव, कालानुभव संबंधी धारणा, मृत्युबोध या मृत्यु से साक्षात्कार की समस्या, अस्तित्ववाद की स्थापना।

साहित्यिक रचना के मूल्यांकन के तीन आधार होते हैं। पारंपारिक या शास्त्र संमत आधार, साहित्यकार के युग की मान्य रचनाधारा, साहित्यकार के खुद के दृष्टिकोण का आधार। इन तीनों में साहित्यकार के अपने दृष्टिकोण का आधार ही अधिक न्यायोचित सिध्दान्त है। वास्तविक किसी साहित्यकार की रचना के मूल्यांकन में यह बात प्रमुख होती चाहिए कि उसने अपने साहित्य में व्यक्ति जीवन का कितना सही चित्रण किया है और इस चित्रण में साहित्यकार का अपना दृष्टिकोण क्या रहा है। वह अपनी रचना से कितना तटस्थ रहा है। साहित्यकार का अपनी कृति से तटस्थ रहनेवाली बात का जहाँ तक प्रश्न है वहाँ हम 'अज्ञेय' को पूरी तरह असफल मानते हैं। 'अज्ञेय' ने पात्रों की निर्मिती की है, वहाँ वे तटस्थ नहीं रह सके हैं। शेखर को तो वे अपने व्यक्तित्व का अंग मानते हैं। शेखर का बचपन का काल उपन्यासकार का अपना बचपन का काल है। भुवन के चरित्र में भी 'अज्ञेय' ने अपनी व्यक्तिगत भावनाओं को भी अधिक व्यक्त किया है। 'अपने-अपने अजनबी' में वे पूरी तरह तटस्थ रहने मे सफल हो गये हैं - ऐसा हम मान सकते हैं।

'अज्ञेय' के तीनों उपन्यासों मे मनुष्य की मूलवृत्तियों के चित्रण तथा विश्लेषण हुए हैं।

ये तीन मूलवृत्तियाँ मानवीय और सर्वव्यापी हैं। अहं, भय और काम इन तीन वृत्तियों को मूल आधार मानकर ही 'अज्ञेय' के उपन्यासों का निर्माण हुआ है। मूलभाव के आधार पर 'शेखर : एक जीवनी' में अहं, 'नदी के द्वीप' में काम और 'अपने - अपने अजनबी' में भय वृत्ति को हम देख सकते हैं। 'अज्ञेय' के उपन्यास चरित्र प्रधान हैं। इसी कारण से इनमें मन का वैज्ञानिक विश्लेषण आ गया है। 'अज्ञेय' जी को मन का वैज्ञानिक विश्लेषण अधिक प्रिय दिखाई देता है। उनके उपन्यासों के पात्र शेखर, भुवन, सेल्मा और योके अपने मन के विश्लेषण में ही पड़े हुए दिखाई देते हैं। इस विश्लेषण प्रवृत्ति की प्रधानता के कारण उनके उपन्यासों में दर्शनिकता और बौध्दिकता आ गई है। 'अज्ञेय' के उपन्यासों में सामान्य लोगों के जीवन के चित्रण का अभाव दिखाई देता है। यह सामान्य लोगों के जीवन का अभाव 'शेखर' में 'विद्रोह' , 'नदी के द्वीप' में वैचारिकता की अमूर्तता और 'अपने-अपने अजनबी' में धार्मिक रहस्यवाद का रुप धारण करता है।

'शेखर : एक जीवनी के संबंध में हम यह कह सकते हैं कि शेखर में एक नई जीवन दृष्टि है। परंपरागत धारणाओं का इसमें फिर से मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है। इसके हर पृष्ठ पर बहुमूल्य विचार रखे गये हैं। इनमें से बहुत से विचारों के साथ हम सहमत नहीं हो सकते, फिर भी उनकी प्रस्तुत करने की पध्दति में बड़ी ही परिपक्व कला है। शेखर की कथा आरंभ से लेकर अंत तक एक प्रखर व्यक्तित्व के विद्रोह की कथा है। पूर्वग्रहों को नष्ट करके तर्क और बुध्दि के प्रकाश में जीवन की व्याख्या करना हिन्दी में अभूतपूर्व प्रयत्न है। अनेक प्रकार की सामाजिक मान्यताओं तथा कार्यकलापों से लेकर पाप-पुण्य, अहिंसा, हिंसा, प्रेम, घृणा तथा जीवन के संबंध में बहुत कुछ विचार किया गया है। बदलते हुए मानवीय विचारों को कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करने का शक्तिशाली प्रयत्न किया गया है।

'शेखर : एक जीवनी' में स्पष्ट हुआ शेखर का विद्रोही रुप पूरी तरह से कृत्रिम दिखाई देता है। शेखर मात्र घृणा का प्रचार करता है। उसमें घृणा करने की शक्ति नहीं है। वह उच्चवर्ग के छात्रावास को छोड़ता है, हरिजन छात्रावास में रहता है और अस्पृश्य लोगों के उध्दार का प्रयत्न करता है। ये सभी बातें ढोंगी प्रवृत्ति को व्यक्त करनेवाली दिखाई देती हैं।

'अज्ञेय' के उपन्यासों में जो मनोवैज्ञानिकता का चित्रण हुआ है, उसके कारण हिन्दी उपन्यास पढनेवालोंकी बौध्दिक चेतना ऊपर उठाने में कुछ मदद हुई है। फ्रायड तथा अन्य मनोविश्लेषणवादियों के अनुसार बचपन का चार पाँच वर्षोंका जीवन ही चेतना का मुख्य आधार है। इसी चेतना के कारण व्यक्ति का आगे आनेवाला पूरा जीवन निर्माण होता है। इसी के अनुसार ही 'अज्ञेय' जी ने 'शेखर : एक जीवनी' के पहले हिस्से में तीन वर्ष के बालक के मन के विश्लेषण का चित्रण

किया है। शेखर के बचपन के जीवन के चित्रण में 'अज्ञेय' ने ईश्वर, मानव जन्म तथा प्रेम व्यापार आदि विषयों को लेकर अनेक जिज्ञासाओंको उपस्थित किया है। शेखर जैसे-जैसे बड़ा होता है वैसे-वैसे ये जिज्ञासाएँ शक्तिशाली रूप धारण करती हैं। इन जिज्ञासाओंका उचित समाधान नहीं होता, तो ग्रंथियोंका रूप धारण कर लेती हैं। इसी पहले हिस्से में जगह-जगह पर व्यक्ति के बौध्दिक चिंतन के क्षणों के मानसिक द्वन्द्व का चित्रण दिखाई देता है। शेखर का पारिवारिक जीवन जब हम देखते हैं तब उसके व्यक्तित्व में यौन संबंधी भावना ही अधिक मात्रा में दिखाई देती है। इस भावना की पूर्ति न होने के कारण शेखर बचपन से ही अस्त-वस्त और विक्षिप्त दिखाई देता है। शशि को जब वह प्राप्त कर लेता है तब उसमें कुछ आश्वस्त होने का भाव दिख पड़ता है। आरंभ से ही शेखर में यौनभाव की अधिकता है। इसका उदाहरण हमें उसके बचपन के अपनी बहन सरस्वति के प्रति किये गये व्यवहारमें देखने को मिलता है। शेखर का अपने पिता के रुक्ष व्यवहार के प्रति घृणा भाव, माँ के शांत स्वभाव के प्रति घृणाभाव आदि मनोवैज्ञानिक मान्यताओंका अतिवादी चित्रण उनके उपन्यास में मिलता है।

'नदी के द्वीप' को कुछ हद तक 'शेखर : एक जीवनी' का विस्तार मानते हुए हम कह सकते हैं कि 'नदी के द्वीप' की प्रेमभावना अलग और बहुधा असाधारण है। उसकी असाधारणता भरोसेमंद है। लेखक का वह कलात्मक सफलता का चिन्ह है। यह असाधारणता दो प्रकार की हैं - 1. जो मुख्य चरित्र हैं - भुवन, रेखा, गौरा - ये समाज के एक विशेष प्रकार के वर्ग से चुने गये हैं। 2. दूसरा प्रकार यह कि उनके बीच के प्रेम संबंध सामान्य ईर्ष्याद्वेष से संचालित नहीं है। उनमें आत्मत्याग अथवा आत्मपीड़ा का रुढिगत रूप नहीं मिलता। 'नदी के द्वीप' में जो प्रेम संबंध है वह बिल्कुल नये ढंग का है, इस प्रेम संबंध में भावुकता को बुध्दि का आधार मिलता है और प्रेम में विशेष प्रकार का संयम है। परंतु इसके साथ ही शरीर के उत्सव भाव को मुक्तरुप में स्वीकार किया गया है। इस प्रकार शरीर का आकर्षण, बौध्दिकता तथा भावुकता 'नदी के द्वीप' की प्रेम संवेदना को एक विशेष उदाररूप देते हैं। इसमें मुख्यरुप से लेखक की संवेदनशील और सुकुमार भाषा की निर्माण शक्ति दिखाई देती है। लिंग संबंधी विचार को ही 'नदी के द्वीप' में अधिकता मिली है। भुवन के चरित्र में अहं की मुख्यता है। यह अहं स्त्री शरीर के प्राप्ति में ही संतुष्ट होता है। मुख्य रुप में लिंग संबंधी विचार भाव और अहं इन दो मनोवृत्तियों पर 'नदी के द्वीप' आधारित है। इस उपन्यास में इन दो वृत्तियों से निर्मित दबी हुई भाव-भावनाएँ, क्षुब्धता, पलायन, आत्मवंचना, अराजकता इत्यादि मानसिक स्थितियोंका विश्लेषण होता है।

'शेखर : एक जीवनी' मानस-शास्त्रीय अधिकता के कारण बौध्दिक जटिलता और अस्पष्टता से भरा हुआ है। चरित्रों का मुख्य आधार 'अहं' है। भुवन, सेल्मा और योके अहं भावना से पीडित है। बचपन से शेखर का जीवन अहंकार युक्त है। उसके चारित्र्य का मुख्य आधार अहं भाव

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

है। शेखर के आत्मविकास में अहं उसकी मदद करता है। 'शेखर : एक जीवनी-' के अन्य पात्रों में भी यह अंहकारी भाव दिखाई देता है। 'नदी के द्वीप' में अहंकारी भावना की व्यापकता स्पष्ट रूप में दिखाई देती है। यही अहंकारी भावना 'अपने-अपने अजनबी' में भी दिखाई देती है।

'अपने-अपने अजनबी' के दोनों पात्रों मे अहंकारी भावना की अतिशयता दिखाई देती है। 'अपने-अपने अजनबी' अश्लीलत्व के दोष से करीबन मुक्त है। बारीकी से देखा जाय तो योके के जगन्नाथन् के प्रति किये गये अंतिम व्यवहार को योके की लैंगिक भावना से जोड़ा जा सकता है। नहीं तो यह उपन्यास अश्लीलत्व के दोषारोप से बचने के लिए पर्याप्त मदद करनेवाला साबित होता है। 'अपने-अपने अजनबी' उपन्यास में मानव जीवन को एक निश्चित आकार देनेका प्रयत्न है। इसी तरह अनुभव के माध्यम से अर्थ देनेवाली शक्ति है। इसमें मृत्युसे साक्षात्कार करने का प्रयत्न है। जीवन का पूर्णविराम है मृत्यु। वह जीवन यात्रा की अंतिम जगह है। मनुष्य मृत्यु के पहले कुछ क्षण उसके बारे में दूसरों से सुनकर उन्हें मरते देखकर जानता है। उसके अचेतन मन में अपनी मृत्यु की संभावना रहती है। मनुष्य आम तौर पर उस मृत्यु की शंका से मुक्त रहता है। अपने जीवन पर उसका ध्यान रहता है और जीवनयापन में ही वह तल्लीन रहता है। जब उसे अपनी मृत्यु की संभावना निश्चित जान पड़ती है तब उसके विचारों में पूरी तरह बदलाव आना स्वाभाविक है। 'मृत्यु से साक्षात्कार' की उसके जीवन में यह स्थिति है। 'योके और सेल्मा' इस प्रथम परिच्छेद में बर्फ के पहाड़ से दबे लकड़ी के घर में योके और सेल्मा मृत्यु से साक्षात्कार करती हैं। सेल्मा कॅन्सर से पीडित, बहुत दुर्बल और वृध्दा है। योके तरुणी है, वह संयोगवश इस परिस्थिति में आ पड़ी है। यह परिस्थिति उसके लिए बिल्कुल अपरिचित और अनिश्चित है। बाकी लोगों की तरह मृत्यु से साक्षात्कार के लिए उसका मन तैयार नहीं है। किंतु वह विवश है। इसी विवशता के कारण उसमें उद्वेग निर्माण होता है।

मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकारोंमें शिल्पगत विशेषताओं के कारण 'अज्ञेय' को सबसे अधिक सफल और चर्चित लेखक माना गया है। बिल्कुल आधुनिक विचारों और प्रवृत्तियोंका उपयोग इनके साहित्य में दिखाई देता है। इनके उपन्यासों में उपन्यास कला का विकास, प्रौढता और दृष्टिकोण की स्पष्टता सिलसिलेवार दिखाई देती है। इनके उपन्यासों में बुध्दिवाद को मुख्य आधार माना गया है। स. ही. वात्स्यायन के उपन्यासों में प्रतिबिंबित व्यक्तिवादी विचार-दर्शन का संदेश आनेवाली पीढियों को प्रेरणा और मार्गदर्शन करने में मददगार साबित होगा।

'अज्ञेय' के उपन्यासों का अध्ययन करने पर हम अंत में इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि वस्तु एवं शिल्प दोनों ही दृष्टियों से अज्ञेय के औपन्यासिक सृजन की अनेक महत्त्वपूर्ण

उपलब्धियाँ हैं जो कि वस्तुतः आधुनिक हिन्दी उपन्यास साहित्य के गौरव संवर्ध्दन में मददगार हुई हैं। इस प्रकार उपन्यासकार अज्ञेय-प्रदेय निर्विवाद रूप से बहुत कुछ अंशों में न केवल हिन्दी साहित्य की, अपितु विश्व साहित्य की अक्षय निधि है।

000